तित्थयर

जैन भवन

आ. श्रीकैलाससागरसूरि ज्ञानमंदिर
श्रीमहावीर जैन आराधना केन्द्र
कोबा (गांधीनगर) पि.
Received 14-3-01

वर्ष : २४ अंक : ११
फरवरी २००१

ज्ञानी होने का सार यह है कि वह किसी भी प्राणी की हिंसा न करे।

Sethia Oil Industries Ltd.

Manufacturers of De-oiled Rice Bran, Mustard Deoiled Cakes, Neem deoiled Powder, Groundnut De-oiled Cakes, Mahua deoiled cakes etc. And Solvent Extracted Rice Bran Oil, Neem Oil, Mustard Oil etc.

Plant
Post Box No. 5
Lucknow Road
Sitapur - 261001 (U.P.)
Ph: 42017/42397/42073
(05862)
Gram - Sethia - Sitapur
Fax : 42790 (05862)

Registered Office
143, Cotton Street
Cal-700 007
Ph: 2384329/
8471/5738
Gram - Sethia Meal

Executive Office
2, India Exchange Place
Calcutta - 700 001
Ph: 2201001/9146/5055
Telex : 217149 SOIN IN
FAX : 2200248 (033)

तित्थयर

श्रमण संस्कृति मूलक मासिक पत्रिका

वर्ष - २४ अंक - ११, फरवरी २००१

॥ जैन भवन ॥

संपादन

लता बोथरा

लेख, पुस्तक समीक्षा तथा पत्रिका से सम्बन्धित पत्र व्यवहार के लिये पता - Editor : **Titthayar,** P-25, Kalakar Street, Calcutta-700 007

विज्ञापन तथा सदस्यता के लिये कृपया सम्पर्क करें –
Secretary, Jain Bhawan, P-25, Kalakar Street, Calcutta-700 007
Subscription for one year : Rs. 55.00, US$ 20.00,
for three year : Rs. 160.00, US $ 60.00,
Life Membership : India : Rs. 1000.00, Foreign : US$ 160.00

Published by Lata Bothra on behalf of Jain Bhawan from
P-25, Kalakar Street, Calcutta-700 007 Phone: 238 2655 and Printed by her
at Arunima Printing Works, 81, Simla Street
Calcutta-700 006 Phone: 241 1006

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	लेख		लेखक	पृ. सं
१.	महावीर काल के विभिन्न संप्रदाय		मुनि मणिप्रभसागरजी	४७७
२.	कर्म की कहानी	-	सुयश मुनिजी पन्यास प्रवर .	४८४
२.	मलयासुन्दरी चरित्र	-		४९१

आवरण चित्र–**श्री अष्टापद (कैलाश)**

Composed by :

Anupriya Printers, 6A, Baroda Thakur Lane, Calcutta-700 007, Ph. 232 6083

महावीर काल के विभिन्न संप्रदाय

–मुनि मणिप्रभसागरजी

भगवान् महावीर के समय अनेक ऐसे आचार्य हुए हैं जो अपने आपको तीर्थंकर, सर्वज्ञ, जिन कहते थे। उस समय विभिन्न परम्पराऐं प्रवर्तमान थी। मुख्य रूप से चार संप्रदायों का उल्लेख जैन शास्त्रों में उपलब्ध होता है।

गोयमा! चत्तारि समोसरणा पन्नता, तं जहा किरियावादी, अकिंरियावादी, अन्नाणियवाई, वेणइसवाई।

–भगवती सूत्र शतक ३०, उद्देश १, सूत्र १

इसी तथ्य को पुष्ट करते हुए कई उल्लेख समवायांग सूत्र में, नन्दीसूत्र आदि में भी उपलब्ध होते हैं। कुल मिलाकर चार मुख्य संप्रदाय – (१) क्रियावादी, (२) अक्रियावादी, (३) अज्ञानवादी, (४) विनयवादी थे। इनके भेद प्रभेदों का वर्णन सूत्रकृतांग वृत्ति में प्राप्त होता है।

असीयसयं किरियाणं, अक्किरियाणं च होइ चुलसीति।
अन्नाणिय सत्तट्ठी वेणइयाणं च बत्तीसा।।

अर्थात् क्रियावादियों के १८० भेद, अक्रियावादियों के ८४ मत, अज्ञानवादियों के ६७ भेद तथा विनयवादियों के ३२ मत है। इन सबका योग ३६३ होता है। चूंकि इनका विचार अनेकान्त रहित, तथ्य रहित है, अतः इन्हें पाखण्डी भी कहा गया है।

१–क्रियावाद

क्रियावाद सिद्धान्त के अनुयायियों का मत था कि कर्ता के बिना लक्षण क्रिया नहीं होती। अतः क्रिया आत्मा के साथ समवाय संबंध रखती है। जो कुछ है वह क्रिया ही है। भाव को मुख्यता नहीं देकर उसे अन्तर्निहित माना है। ये क्रियावादी जीवादि नौ पदार्थो को एकान्त अस्ति स्वरूप से मानते हैं। प्रवचन सारोद्धार की इन गाथाओं में इनके १८० भेद बताये गये हैं।

जीवाइनवपयाणं अहो ठविज्जंति सयपरय सद्दा।
तेसिंपि अहो निच्चानिच्चा सद्दा ठविज्जंति।।
कालस्सहाव नियई ईसर अप्पत्ति पंचविपयाइं।
निच्चानिच्चाणमहो अणुक्कमेणं ठविज्जंति।।
पंचहिवि चउक्केहि पत्ता जीवेण वीसई भंगा।
एवमजीवाई हिवि य किरियावाई असिइसयं।।

जीव, अजीव, आस्रव, बंध, संवर, निर्जरा, पुण्य, अपुण्य और मोक्ष इस प्रकार नौ पदार्थ है। हर पदार्थ के काल, ईश्वर, आत्मा, नियति और स्वभाव भेद माने हैं। ये नित्य और अनित्य भेद से दश हुए है। फिर स्वतः और परतः इस प्रकार इन दो से गुणा करने पर बीस भेद होते हैं। इसी प्रकार हर पदार्थ के बीस भेद होने पर बीस गुणा नौ, कुल एक सौ अस्सी भेद होते हैं।

२ अक्रियावादी

इनकी मान्यता है कि क्रिया पुण्यादि रूप नहीं है। क्योंकि क्रिया स्थिर पदार्थ से होती है जबकि इस जगत में कोई स्थिर पदार्थ नहीं है। सभी पदार्थ विनाशधर्मा हैं। ये आत्मा को नहीं मानते। ये सात पदार्थ मानते हैं। जीव, अजीव, आस्रव, संवर, निर्जरा, बंध, मोक्ष इन सात पदार्थों के स्व और पर तथा उनके काल, ईश्वर, आत्मा, नियति, स्वभाव और यदृच्छा इस प्रकार भेद करने से कुल ८४ भेद होते हैं।

इनके भेद प्रभेद समझाने वाली प्रवचन सारोद्धार की गाथाऐं इस प्रकार है–

इह जीवाइपयाइं पुन्नं पावं विणा ठविज्जंति।
तेसिमहोमायम्मि ठविज्जए सपरसद्ददुगं।।
तस्सवि अहो लिहिज्जइ काल जहिच्छाय पयदुगसमेयं।
निहयस्सहाव ईसर आपत्ति इमं पय चउक्कं।।
पढमे भंगे जीवो नत्थि सओ कालओ तयणुबीए।
परवोवि नत्थि जीवो काला इव भंगगा दोन्नि।।
एव जइच्छाईहिवि पएहि भंगद्दुगं दुगं पत्तं।
मिलियावि ते दुवालस संपत्ता जीवतत्तेणं ।।
एवमजीवाईहिवि पत्ता जाया तओ उ चुलसीई।
भेया अकिरियवाईण हुंति इमे सव्वसंखाए।।

३ अज्ञानवाद

इनका मानना है कि इस जगत में अज्ञान ही सुख और शांति का आधार है। ज्ञान तो झगड़े का और अशान्ति का कारण है। ज्ञान से ही भिन्न-भिन्न मतों और उपद्रवों की उत्पत्ति होती है। अतः ज्ञान की कोई आवश्यकता नहीं है

इसके कुल ६७ भेद शास्त्रों में बतलाये गये हैं।

जीव, अजीव, आस्रव, संवर, निर्जरा, पुण्य, अपुण्य, बंध और मोक्ष इन नौ पदार्थों के सत्व, असत्व, सदसत्व, अवाच्यत्व, सदवाच्यत्व, असदवाच्यत्व, सदसदवाच्यत्व इस प्रकार सात प्रकार से कुल ६३ भेद हुए हैं। तथा उत्पत्ति के सत्वादि और चार विकल्प होने से कुल ६७ भेद होते हैं।

प्रवचन सारोद्धार में ये गाथाऐं आती है।

संतमसंत संतासंत भवतत्व सयअवत्तत्वेह।।
संतो जीवो को जाणइ अहवा किं व तेण नाएणं।
सेसपएहिवि भंगा इय जाया सत्त जीवस्स।।
एवम जीवाईणविपत्तेयं सत्त मिलिय ते सट्ठी।
तह अन्नेवि हु भंगा चत्तारि इमे उइह हुंति।।
संती भावुप्पत्ती को जाणइ कि च तीए नायाए।।

४ विनयवाद

ये जगत में मात्र विनय को मानते हैं। न तो इनका कोई वेश होता है, न शास्त्र! ये केवल मोक्ष मानते हैं। इनके ३२ भेद माने जाते हैं।

प्रवचन सारोद्धार में इनका वर्णन करने वाली ये गाथाऐं है।

सुर निवइ जईन्नाई थविरा वम माई पिइसु एसरि।
मण वयण काय दाणेहि चउव्विहो किरए विणओ।।
अट्ठवि चउक्कगुणिया बत्तीस हवंति वेणइयभेया।
सव्वेहिं पिंडिएहिं तिन्नि सया हुंति तेसट्टा।।

सुर, राजा, यति, ज्ञाति, स्थविर, अधम, माता और पिता इन आठों की मन से, वचन से, काया से और देश काल के अनुसार उचित दानादि से विनय करना। इस प्रकार ये ३२ भेद होते हैं।

इन चार प्रमुख मतों के अलावा भगवान महावीर के समय में और कई सिद्धान्त, मत मतान्तर प्रतिष्ठित हो रहे थे और उनके धर्माचार्य अपने अपनें सिद्धान्तों का प्रचार करते थे।

निशीथ चूर्णि में आजीवक, ईसरमत, उलूग, कपिलमत, कविल, कावाल, कावलिय, चरग, तच्चन्निय, परिव्वायग, पंडरंग, बोद्रित, भिच्छुग, भिक्खू, रत्तपड, वेद, सक्क, सरक्ख, सुतिवादी, सेयवड, सेयभिक्खु, शाक्यमत, हड्डसरक्ख आदि कई मतवादियों के नामोल्लेख मिलते हैं।

इनके अलावा कुछ और संप्रदायों का उल्लेख शास्त्रों तथा विभिन्न प्रकरणों में उपलब्ध होता है।

१ बौद्ध संप्रदाय

इस मत का प्रवर्तन भगवान् बुद्ध ने किया था। बौद्धों के दो विभागों में से एक तो इस जगत का निर्माण रूप, वेदना, विज्ञान, संज्ञा और संस्कार इन पाँचों स्कन्धों से मानता है। दूसरा पृथ्वी धातु, जल धातु, तेज धातु, वायु धातु इन चार धातुओं को ही जगत का धारक मानते हैं। आत्मा को दोनों ही मत वाले नहीं मानते।

२ आजीवक संप्रदाय

सूत्रकृतांग आदि कई सूत्रों में इस संप्रदाय का उल्लेख मिलता है। मक्खलिपुत्त गोशालक ने इस मत का प्रवर्तन किया था। कल्पसूत्र में इस मत के प्रारंभ काल का उल्लेख है। इसे नियतिवाद भी कहते हैं। इस मत की मान्यता है कि सुख दुख में जीव निमित्त नहीं है। वह कर्ता नहीं है। सब कुछ नियत है। दैवनियत ही होता है। पुरुषार्थ का कोई अस्तित्व नहीं है। पुरुषार्थ जो दिखाई देता है, वह नियति का हिस्सा मात्र है।

३ उच्छेदवाद

अजित केसकम्बली इस मत के कर्ता माने जाते हैं। इसे जड़वाद तथा नास्तिकवाद भी कह सकते हैं। इनकी मान्यता थी कि पुण्य, पाप, दान, यज्ञ, हवन आदि सब कुछ व्यर्थ है। इनका कोई फल नहीं है। न अच्छे का फल अच्छा है, न बुरे का फल बुरा है। न यह लोक है, न परलोक! चार भूतों से मिलकर मनुष्य बना है। उसके मरने पर चारों धातुओं से बना यह शरीर अपनी-अपनी धातु में समा जाता है।

४ अन्योन्यवाद

आचार्य प्रक्रुद्ध कात्यायन इस वाद के प्रमुख व्याख्याता थे। ये पृथ्वी, अप्, तेज, वायु, सुख, दुख तथा जीवन इस प्रकार सात पदार्थो का मान्यता देते थे। उनका कहना था कि सातों पदार्थ न किसी ने बनाए, न किये, न करवाये। ये बंध य कूटस्थ तथा खम्भे के समान अचल है। इस वाद को अकृततावाद भी कहा जाता है।

५ विक्षेपवाद

आचार्य बेलट्ठिपुत्त द्वारा प्रचलित इस वाद को अनिश्चततावाद भी कहा है। उनका कहना है कि परलोक है या नहीं, यह मैं नहीं समझता! आत्मा है या नहीं, यह मुझे मालूम नहीं! परलोक है, यह मैं नहीं मानता तथा परलोक नहीं है, यह भी मैं नहीं मानता! अच्छे या बुरे कर्मों का फल मिलता है, यह मैं नहीं मानता और नहीं मिलता है, यह भी मैं नहीं मानता। वह होता भी है, या नहीं होता है, नहीं मानता। इस प्रकार हर बात में अनिश्चय का दर्शन इस दर्शन का सिद्धान्त है।

६ अत्तुक्कोसिय

इस सम्प्रदाय के साधु बड़े स्वाभिमानी होते थे। अहंकार के साथ ही उनकी हर क्रिया संपादित होती थी।

७ भूइकम्मिय

इस मत के लोग भस्म आदि द्वारा दूसरों की ज्वर आदि व्याधियों का उपचार किया करते थे।

८ चण्डिदेवग

ये लोग अपने पास एक छोटी तलवार धार्मिक प्रतीक के रूप में अपने पास में रखते थे।

९ दगसोयरिय

इनका समुदाय शारीरिक शुद्धता पर ही जोर देता था। यदि स्नान के बाद इन्हें कोई छू लेता था तो ये ६४ बार वापस स्नान करते थे।

१० धम्मचिंतक

इस समुदाय के लोग पूरा समय अपना चिंतन में ही व्यतीत करते थे।

११ गीयरइ

अपने जीवन का अधिक से अधिक समय गीत संगीत को ही देते थे। उसी को धर्म मानकर तन्मय रहते थे।

१२ गोअम

इस समुदाय के लोग बैंलों को कौड़ियों आदि से सुन्दर श्रंगार से सुसज्जित करके श्रमण करते हुए अपनी आजीविका का उपार्जन करते थे। भोजन में चावल ही अधिकतर ग्रहण करते थे।

१३ कम्मारभिक्खु

अपने आराध्य गुरू की प्रतिमा लेकर गांव घूमते थे और इस प्रकार दान द्वारा प्राप्त द्रव्य से अपनी आजीविका चलाते थे।

१४ कुच्चिय

लम्बी दाढ़ी और मूंछ रखने के कारण ये कुच्चिय कहलाते थे। अधिकतर समय बालों के संवारने में व्यतीत होता था।

१५ पिण्डोलग

इस समुदाय के लोग शारीरिक शुद्धता में विश्वास नहीं रखते थे। अत्यधिक मैंले रहते थे। शरीर में जुएं रेंगती रहती थी दुर्गन्ध की तो सीमा ही नहीं होती थी।

१६ परपरिवाइय

अन्य समुदाय के साधुजनों की निन्दा करने के कारण इनका नाम परपरिवाइय पड़ा था। दिनभर ये अन्यों की त्रुटियां खोजते रहते और फिर निन्दा विकथा करते रहते।

१७ ससरक्ख

ये नग्न रहते थे। हाथ में ही भोजन करते थे। इन्द्रजाल, जादू विद्या में निपुण ये लोग जनता को अपनी विद्या द्वारा आकर्षित कर आजीविका का निर्वाह करते थे।

१८ वणीमग

अत्यधिक सुस्वादु भोजन के अतिलोभी इस समुदाय के लोग भिक्षावृत्ति से अपना जीवन यापन करते थे।

१९ वारिभद्रक

इस संगठन के लोग कांई–शैवाल तथा पानी का ही भोजन किया करते थे।

२० वारिखल

भोजन करने के पात्र को भोजन करने के उपरान्त बारह बार मिट्टी से रगड़-रगड़ कर धोने के कारण इनका नाम वारिखल पड़ा था।

विभिन्न मतों और विचारधाराओं के चलते परमात्मा महावीर ने पंच महाव्रतों का धर्म और अहिंसा, अनेकांत और अपरिग्रह के सिद्धान्तों की उद्घोषणा की। आम जनता ने परमात्मा महावीर के सत्य को अहोभाव से स्वीकार करते हुए अपने आचरण को इन सिद्धान्तों से जोड़ा।

भगवान् महावीर ने इन सभी सिद्धान्तों का यथा संभव समन्वय किया। उन्होंने वस्तु के स्वभाव को धर्म कहा। उस काल की बाह्याचार से जुड़ी परम्पराओं के मध्य परमात्मा के इस उद्घोष ने तपती धरती पर बरसात की फुहार का काम किया। लाखों लोगों ने इस सत्य धर्म को स्वीकार कर आत्म कल्याण साधने का पुरुषार्थ किया।

कर्म की कहानी

पन्यासप्रवर श्री सुयश मुनि जी

कर्म बन्ध का कारण, मिथ्यात्व, अविरति, कषाय और योग इन चारों का कर्मण-वर्गणा का द्वार अगर खुला हो अर्थात चार में से एक पर भी नियन्त्रण न हो तो उस जीव को मिथ्यात्वी जीव कहते है। इस प्रकार की कक्षा में रहे हुये जीव को अभव्य जीव भी कहा जाता है। वे अभव्य जीव मुक्ति के लिये अयोग्य होते है।

प्रथम अर्थात मिथ्यात्व का द्वार बन्द हो जाने पर जीवात्मा को सम्यक्त्व की प्राप्ति होती है। सम्यक्त्व धारी जीव योग्या योग्य, धर्मा धर्म का भेद समझते है।

प्रथम दो अर्थात-मिथ्यात्व और अविरति का द्वार बन्द होने पर, उस जीवात्मा को चारित्र का उदय होता है। वैसे जीव, देश या सर्वविरति चारित्र ग्रहण कर सकते है। ऐसे जीवों को भोग के प्रति आसक्ति भाव कम हो जाता है, संसार के इन्द्रीय सुख का आकर्षण भी अल्प रहता है।

प्रथम तिथि अर्थात मिथ्यात्व, अविरति, कषाय का द्वार-बन्द होने पर आत्मा की परमशुद्धावस्था केवलज्ञान की प्राप्ति होती है। वैसे जीव सभी इन्द्रियों पर विजय प्राप्त कर वीतराग, जिन बन जाते है।

चरम तीर्थाधिपति श्रमण भगवान महावीर स्वामी नयसार नामक प्रथम भव में मिथ्यात्वनामक प्रथम द्वार बन्द करके सम्यक्त्व की उपलधि किये। २९वें भव में ३० वर्ष की उम्र में दीक्षा लेकर दूसरा द्वार अविरति बन्द किये। और साढ़े बारह वर्ष तक घोर तपस्या करके ४२ वर्ष की उम्र में कषाय नामक तीसरा द्वार बन्द करके केवलज्ञान प्राप्त किये और ७२ वर्ष की उम्र में पावापुरी नगरी में हस्तीपाल राजा के सभागृह में चौथा द्वार बन्द करके मोक्ष, निराकार पद को पायें।

कर्मबन्ध का चौथा द्वार-योग है। योग अर्थात अन्य को आत्मा के साथ जोड़ने की प्रवृत्ति। ये योग तीन प्रकार के है। (१) मनयोग

(२) वचनयोग (३) काय योग। इनके माध्यम से कार्य करना। इनके माध्यम से जो कार्य किया जाता है उसको उस योग के नाम से पहचाना जाता है। ये तीनों योग प्रशस्त और अप्रशस्त दोनों प्रकार के होते है। मन से शुभ चिन्तन किसी आत्मा के उत्कर्ष की भावना प्रशस्त मनयोग है इसका विपरीत सोचना अप्रशस्त मन योग है।

वचन से किसी को उचित और हितकर वचन बोलना प्रशस्त वचन योग है। इसके विपरीत भाषा के प्रयोग को अप्रशस्त वचन योग कहते है। शरीर से अशुभ, अधर्म, बाह्य प्रवृत्ति करना अप्रशस्त काय योग है। इसकी विपरीत प्रवृत्ति को प्रशस्त काय योग कहते है।

कर्मण-वर्गणा के आने के चार द्वार के विषय में हम सविस्तार समझ गये है। अब इसको एक रूपक के माध्यम से समझने का प्रयत्न करें।

जीवात्मा एक पानी बिना सूखा और सुन्दर सरोवर है। इसमें कर्मरूपी पानी आने के लिये मिथ्यात्व, अविरति, कषाय, और योगरूपी वे चार रास्ते है। वे चार रास्ते जब तक खुले हैं आत्मा रूपी सरोवर में कर्मरूपी पानी आना चालू रहता है। इन चार द्वारों को क्रमिक व्रत द्वारा बन्द करके तप, ध्यान और स्वाध्याय, द्वारा कर्म को नष्ट करने से सरोवर रूपी आत्मा शुद्धतम दशा को उपलब्ध करती है। यह आत्मा जब पूर्ण रूप से शुद्ध हो जाती है तब केवलत्व की उपलब्धि होती है।

आत्मा अनन्तज्ञान, अनन्त दर्शन अनन्त सुख आदि का स्वामी है पर कर्मों के कारण अज्ञानी, अन्ध, दुःखी, भिरवारी का रूप धारण करती है। वे सभी स्थिति कर्म के कारण जीवात्मा में होती है। जीवात्मा के साथ कर्म का मिलन होते ही चार स्थिति निश्चित हो जाती है। उसी आधार पर आगे चलकर जीवात्मा को कर्म का भोग करना पड़ता है।

(क) स्वभाव **(Nature)**-- बन्ध कर्म का उदय काल में स्वरूप कैसा होगा। अर्थात उदयकाल में कर्म किस रूप में फल देगा जैसे--एक लड्डू मीठा है, पेट भरा जा सकता है पर अधिक खाने से नुकसानदेह होगा।

(ख) काल **(Period)** -- बन्ध कर्म का प्रभाव जीवात्मा के साथ कितना समय तक रहेगा। अर्थात कितना समय के बाद फल देगा और

कितना समय तक देगा। जैसे–एक लड्डू तैयार रसके प्रभाव से २०/२५ दिन सही रहेगा फिर बिगड़ जायेगा।

(ग) बल (**Power**) – वह कर्म किस प्रकार का प्रभाव दिखायेगा। अर्थात क्या कार्य करेगा। जैसे - लड्डू भूख को मिटायेगा। पानी प्यास को बुझायेगी।

(घ) प्रमाण (**Quantity**) – इस कर्म का प्रमाण कितना होगा। जैसे-५० ग्राम बेसन का २००ग्राम लड्डू बनेगा। इस प्रकार कर्म के विषय में भी चार कारण घटते है।

(क) स्वभाव — जब कर्म का रजकण जीवात्मा के साथ मिलता है, उसी समय उस कर्म का स्वभाव भी निश्चित हो जाता है। एक व्यक्ति अल्प प्रयत्न से अपार धन उपलब्ध कर लेता है। पर कंजूस स्वभाव के कारण न स्वयं भोग करता है, और न अन्य को दे पाता है। दूसरी ओर व्यक्ति के पास धन नही है, प्रयत्न करने पर भी प्राप्त नही कर पाता है। उदार स्वभाव है। अर्थात हम जिस प्रकार के स्वभाव के कर्म का रजकण ग्रहण करते है उसी आधार पर उस कर्म का परिणाम भोग करते है। कर्म का रजकण जीवात्मा के साथ मिलने की क्रिया को शास्त्रीय भाषा में **कर्म बन्ध** कहते है। फिर उनके बन्ध समय के स्वभाव के अनुरूप अलग-अलग प्रकार के फलदायी होता है। कर्मबन्ध का अलग-अलग आठ प्रकार है जिसे अष्टकर्म कहते है। कर्मो को अपने स्वभाव के अनुरूप आठ भागों में विभाजित किया गया है।

अष्ट कर्म –

(१) ज्ञानावरणीय कर्म – जीवात्मा को ज्ञान उपलब्ध करने में जो बाधक हो उससे ज्ञानावरणीय कर्म कहते है। इसी कर्म के कारण संसार में विभिन्न बुद्धिस्तर के व्यक्ति मिलते है। कोई महाज्ञानी वैज्ञानिक तो कोई महामूर्ख। किसी को एक बार देखने पर या पढ़ने पर याद रह जाता है तो कोई बारंबार देखने-पढ़ने पर भी भूल जाता है।

(२) दर्शनावरणीय – जो देखने में बाधक बने या वस्तु का वास्तविक रूप न देखने दे उससे दर्शनावरणीय कर्म कहते है। जैसे– अन्ध व्यक्ति, रंगीन काँच, भ्रम आदि।

(३) वेदनीय कर्म – जिसके द्वारा सुख दुःख का अनुभव हो उससे वेदनीय कर्म कहते है।

(४) मोहनीय कर्म – जिसके द्वारा संसार के विविध कार्य करने की इच्छा, अवास्तविक कामना जगे उसे मोहनीय कर्म कहते है। जैसे- नाटक देखने की इच्छा। किसी व्यक्ति को कष्ट देने की इच्छा।

(५) आयुष्य कर्म – जिससे कहाँ? किस प्रकार? और कितना समय रहना निश्चित होता है उसे आयुष्य कर्म कहते है। जैसे, मनुष्य, पशु, देव, १००, ५०, २० वर्ष।

(६) नाम कर्म – जिससे शरीर का रंग, रूप, सम्मान, अपमान, आदि निर्णय होता है, उसे नाम कर्म कहते हैं। जैसे – काला, गोरा, कुष्ठरोग,

(७) गोत्र कर्म –जिससे ऊँच, नीच का भेद सर्जन होता है उसको गोत्र कर्म कहते है। जैसे - ब्राह्मण, चमार, गुलाब, गेंदा आदि।

(८) अन्तराय कर्म – कार्य करने में जो बाधक रूप बने उसको अन्तराय कर्म कहते है। जैसे–समर्थ होते हुये भी सुगर की बीमारी में मीठा न खाना।

आत्मा के वास्तविक गुणों को ढकने का कार्य ये आठ कर्म करते हैं।

(१) ज्ञानावरणीय – आत्मा के अन्दर अनन्त ज्ञान है। संसार का कोई भी पदार्थ आत्मा से अज्ञान नहीं है। परन्तु ज्ञान को ढकने वाला ज्ञानावरणीय कर्मरूपी बादल सूर्यरूप आत्मा के सामने आने से अज्ञान रूपी अन्धकार छा जाता है।

ज्ञान के साथ असद् व्यवहार करने पर ज्ञानावरणीय कर्म का बन्द होता है। जैसे – ज्ञान की सामग्री, ज्ञानी का अपमान। लिखे हुऐ (अक्षररूपी सरस्वती) कागज पर खाना, बैठना, गन्दा साफ करना। थूक से अक्षर मिटाना या पन्ने पलटना, अशुद्ध स्थान या समय पर ज्ञान की अशातना करना। ज्ञान सामग्री अशुद्ध स्थान पर रखना। पढ़ने वालो को बाधा डालना। पेन, पेनसिल मुखमें डालना, ज्ञान का दुरुपयोग करना आदि। इस प्रकार ज्ञान की विराधना से बचकर ज्ञान की साधना करने से ज्ञान की उपलब्धि होती है।

ज्ञान की उपासना प्रारंभ के लिये कार्तिक शुक्ला पंचमी उत्तम दिन है। उस दिन से पाँच वर्ष, पांच महीना तक ज्ञान की आराधना करने

का विधान है।

किसी भी वर्ष की कार्तिक शुक्ला पंचमी से यह आराधना प्रारंभ कर सकते हैं। प्रत्येक महीने की शुक्ला पंचमी के दिन यह तय किया जाता है कि पाँच वर्ष पाँच महीनें में ६५ दिन की उपासना होती है। आराधना के दिन उपवास, आयंबिल, एकासना से साधना कर सकते हैं। साधना के दिन फल, फूल, मिठाई, धूप, दीप, आदि से ज्ञान की पूजा होती है। उच्च स्थान पर पुस्तकादि ज्ञान की सामग्री रखकर ज्ञान की स्थापना करें। पंचमी के दिन निम्नोक्त मन्त्र की २० माला (२०००) जाप करनी चाहिये। नित्य एक माला गिननी चाहिये।

मंत्र

ॐ ह्रीं नमो नाणस्स

आराधना की पूर्णाहूति के समय यथाशक्ति उद्यापन अवश्य करना चाहिये। ज्ञान की विराधना करने पर क्या दुष्परिणाम आता है, इस सम्बन्ध में एक प्राचीन घटना है।

पद्मपुर नामक नगरी थी। यहाँ पर अजित सेन राजा राज्य करता था। यशोमति नामकी उसकी राणी थी। बरदत्त नाम का एक मात्र पुत्र था। बचपन से ही राजकुमार मन्द बुद्धि का था। अनेक पंडितों द्वारा प्रयत्न करने पर भी वह एक अक्षर भी पढ़ नहीं पाया। मूर्ख पुत्र को देखकर राजा बहुत दुःखी हुये। कुछ बड़ा होते ही कुष्ठरोगी भी हो गया। इसी नगरी में सिंहदास सेठ की पुत्री गुणमंजरी थी। जो जन्म से ही रोगी और मूक थी। बहुत प्रयत्न करने पर भी उन्हें स्वस्थ नही कर पाये। एक बार इस नगरी में आचार्य विजय सेन सूरि जी पधारे। धर्म स्थान में रोज प्रवचन होने लगा। आचार्य श्री प्रवचन में विभिन्न विषयो पर सविस्तार व्याख्या कर रहे थे। सिंहदास सेठ भी प्रवचन सुनने के लिये रोज वहाँ जाते। सिंहदास सेठ ने एक दिन गुरूदेव से अपने दुःख के साथ पुत्री की स्थिति निवेदन की गुरुदेव बोले– हे महानुभाव! इस कन्या ने पूर्व भव में ज्ञान की विराधना की थी। जिसके कारण इस जन्म में मुक और रोगी शरीर पाया है।

पूर्व भव में आपकी पुत्री जिनदेव नामक एक व्यक्ति की पत्नी थी। इसका नाम सुन्दरी थी। इसकी चार पुत्रियाँ और पाँच पुत्र थे। पुत्रों को पढ़ने में कष्ट होने के कारण पुत्र स्नेह वश पढ़ने के लिये कष्ट के कारण किताबों को ही जला दिया। बच्चों को पढ़ाना बन्द कर दिया। इतना ही नहीं ज्ञान और ज्ञानी की निन्दा करती रही। बच्चे जब बड़े हो गये। अनपढ़ रहने के कारण उनकी शादी नहीं हो रही थी। इस बात को लेकर पति, पत्नी में कभी-कभी झगड़ा और परस्पर दोषारोपण होता रहता था। एक दिन झगड़े का रूप बहुत ही बढ़ गया। जिनदेव ने क्रोध में अपनी पत्नी को एक बड़ा पत्थर मार दिया, उससे वह मर गई और आपके यहाँ पुत्री रूप में जन्मी है। अपने जीवन की पूर्व कथा सुनते-सुनते गुणनन्दी को जाति स्मरण ज्ञान उत्पन्न होता है। स्वयं पूर्व जीवन के सभी दृश्य देखती है। कर्म से युक्त होने के लिये ज्ञान की उपासना करती है। इस धर्म सभा में राजा अजितसेन भी आने लगा। एक दिन उन्होंने भी अपने पुत्र की अज्ञानता का कारण जानना चाहा। गुरुदेव बोले— हे राजन्——।

श्रीपुर नगर में वसुसार और वसुदेव नाम के दो भाई रहते थे। दोनों भाई वैराग्य पार कर संसार त्याग करके साधु बन गये। छोटा भाई पढ़ने में तेज था। पढ़लिखकर विद्वान बना। गुरु और आचार्य बना। बड़ा भाई कम पढ़ा था खाता-पीता और आराम करता था। सब समय पढ़ने से परेशान होकर आचार्य श्री मन ही मन सोचने लगें। लिख-पढ़कर जीवन में अशांति बढ़ गई। न पढ़ना ही ठीक है क्यों कि खाओं, पियो और सोजाओ कोई पूछने वाला न कहने वाला,। इससे तो मूर्खता ही अच्छी है। इस प्रकार की मन से ज्ञान की विराधना करके वहां से मर कर आपके पुत्ररूप में वरदत्त के नाम से जन्म लिया है। वरदत्त राज कुमार ने भी अपना पूर्व भव जान कर गुरुदेव के निर्देशानुसार ज्ञान की उपासना करके अज्ञान को दूर किया।

ज्ञानावरणीय कर्म आँख में बँधी हुई पट्टी जैसा है।

ज्ञान पाँच प्रकार का है।–

(१) मतिज्ञान (२) श्रुत ज्ञान (३) अवधिज्ञान् (४) मनः पर्यवज्ञान (५) केवल ज्ञान।

इन ज्ञान को प्रगट न होने देने के कारण उसे आवरण कहते है। जैसे मतिज्ञान के आवरण का कारण मतिज्ञाना वरणीय है। ज्ञानावरणीय कर्म के ५ भेद है।–

(१) मतिज्ञानावरणीय कर्म (२) श्रुत ज्ञानावरणीय कर्म (३) अवधिज्ञानावरणीय कर्म (४) मनः ज्ञानावरणीय कर्म (५) केवल ज्ञानावरणीय कर्म।

(२) दर्शनावरणीय कर्म – ज्ञान का कार्य जानना है तो दर्शन का कार्य देखना है। दर्शना वरणीय कर्म देखने की शक्ति मन्द करता है। पर कर्मावरण के कारण इन्द्रियां उचित कार्य नहीं करती है। इस दर्शनावरणीय कर्म के कारण जीव बधीर, तोतला, अन्ध बनता है। इस कर्म का पाँच इन्द्रियों पर अधिपत्य रहता है।

इसलिये पाँचो इन्द्रियों का दुरुपयोग नहीं करना चाहिये। दीन दुःखी का उपहास नही करना चाहिये। हम जैसा कर्म करते है आगे चलकर वैसा ही फल पाते हैं।

दर्शनावरणीय कर्म के ९ भेद है। (१) चक्षुदर्शनावरणीय (२) अचक्षुदर्शनावरणीय (३) अवधिदर्शनावरणीय (४) केवल दर्शनावरणीय (५) निद्रा (६) निद्रा-निद्रा (७) प्रचला निद्रा (८) प्रचला-प्रचला निद्रा (९) थिणर्द्धि निद्रा।

क्रमशः

मलयासुन्दरी चरित्र

राजा–पुत्र! वह नवीन पुरुष हमारे देखते हुये अकस्मात् दिव्य रूपधारी स्त्री क्योंकर बन गई?

महाबल – पिताजी! मध्यरात्रि में रूदन करती हुई उस स्त्री का शब्द सुनने के बाद उसके शब्दानुसार जाते समय (मलयासुन्दरी की ओर इशारा कर) इस आप की पुत्रवधू को मैं अपने वस्त्राभूषण सहित पुरुष के रूप में केलों के बगीचे में छोड़ गया था। प्रातःकाल होने पर किसी तरह वह फिरती हुई यहां आ गई और आप ने उसकी घट सर्प का भयंकर दिव्य देकर कठिन परीक्षा ली। आप के महान् पुण्योदय से उस परीक्षा में विधाता ने मुझे ही सर्प के रूप में भेज दिया। मैंने उसे पहिचानते ही गुटिका के प्रयोग से पुरुषरूप बनाने वाला उसके मस्तक पर जो तिलक किया हुआ था वह तिलक अपनी जीभ से मिटा दिया। उसके मिटते ही वह आप लोगों के समक्ष अपने स्वाभाविक रूप में वीरधबल राजा की पुत्री हो गई।

यह राजकुमार की ही पत्नी है, यह निश्चय होते ही राजा आदि तमाम मनुष्य आदर और स्नेह की दृष्टि से मलयासुन्दरी के सन्मुख देखने लगे। इस समय महाबल ने मलयासुन्दरी के सन्मुख देख कुछ इशारा किया जिससे तुरंत ही उठकर मलयासुंदरी ने मर्यादा पूर्वक श्वसुर और सास के चरणों को हाथ लगाकर नमस्कार किया। उन्होंने भी प्रसन्न हो उसे अखण्ड सौभाग्यवती रहो, यह आशीर्वाद दिया।

इस वक्त अपने अपराध का पश्चाताप करते हुए महाराज शूरपाल के नेत्रों से अश्रु बहने लगे। मस्तक हिला कर वह बोल उठे–कितना बदनसीब हूं मैं कि मैंने अपनी पुत्रबधू पर शत्रु के समान इतना अनुचित आचरण किया। नगर के प्रधान नागरिक बोले–महाराज! इसमें आपका नहीं परन्तु अज्ञानता का ही अपराध है। रानी पद्मावती ने हाथ पकड़ कर पुत्रबधू को अपनी गोद में बैठाकर स्नेह से कहा – पुत्री! तूने उस

समय अपना सच्चा वृतान्त क्यों न बतला दिया? अथवा उस अवसर पर तेरा मौन रहना ही ठीक था। क्योंकि तुम्हारी यह विचित्र घटना उस वक्त सच कहने पर भी किसी के मानने में न आती। पुत्री! अज्ञानता के कारण हमने तुझे कैसा असह्य दुःख दिया है? हा, हा! यदि उस अवसर पर तेरा कुछ भी अनिष्ट होता तो हमारी क्या दशा होती? सचमुच ही अभी तक हमारे पुण्य का उदय है, इसी कारण इतना कष्ट सह कर भी हमारे कुल का उद्धार हो गया। बेटी! तू परमार्थ को जानने वाली कुलीन बाला है अतः हमारा यह अपराध तुझे क्षमा करना चाहये। तेरे सरीखी सद्‌गुणवाली राजकुमारी के साथ विधिपूर्वक विवाह कर वधूसहित सत्यप्रतिज्ञ राजकुमार को देख हम अपने मानवजन्म को सफल समझते हैं। यों कहकर रानी पद्‌मावती ने अपने कीमती आभूषण देकर पुत्रवधू मलयासुन्दरी का अच्छी तरह सत्कार किया।

राजा –बेटा! अलंबगिरि की गुफा में सर्परूप में फिरते हुए तुमने क्या-क्या अनुभव किया? महाबल बोला पिताजी! शेष दिन तो शान्ति से ही बीत गया था। संध्या समय योगी मेरे पास आया, उसने आक के दूध से मेरे मस्तक पर किये हुए तिलक को मिटा दिया, इससे मेरा स्वाभाविक रूप हो गया। वह फिर मुझ से बोला–कुमार! चलो फिर अपना मंत्र साधन शुरु करें।

मैं उसके साथ चला गया। अग्नि से जाज्वल्यमान कुण्ड के पास जाकर योगी ने मुझे फिर उस कल वाले मुर्दे को लाने की आज्ञा दी। मैंने पहले के समान ही बड़ से मृतक को नीचे उतार योगी के पास ला रक्खा। योगी ने उसे स्नान कराकर मण्डल के अन्दर सुला दिया, और उत्तर साधक के तौरपर मैं उसके पास खड़ा रहा। अब ज्यों-ज्यों उस योगी ने मंत्र जाप जपना शुरू किया त्यों-त्यों वह मृतक उठ-उठ कर फिर वापिस नीचे पड़ने लगा। इस तरह जाप करते हुए आधी रात बीत गई। तब आकाश में डमरू का शब्द सुनाई दिया। इसके बाद प्रत्यक्ष में यह ध्वनि सुन पड़ी अरे! यह मृतक अशुद्ध है, इससे सुवर्ण पुरुष सिद्ध न होगा।

यों बोलती हुई कोपायमान देवी आकाश से उतरी, और कपाली योगी को केशों से पकड़ कर ऊपर उछाल उसने उस दहकते हुऐ अग्नि कुण्ड में फेंक दिया।

धैर्यवान होने पर भी मैं उस देवी की क्रूर और भयंकर आकृति को देख क्षुब्ध हो गया। देवी ने एक नागपाश से मेरे हाथ बांध दिये और ऐसी सुन्दर आकृति वाले कुमार को मारना ठीक नहीं यों कहकर मेरा पैर पकड़ वह देवी मुझे आकाश मार्ग से ले चली। यहां आकर इस बड़ की शाखा में मेरे दोनों पैर बाँधकर वह आकाश में चली गयी। मैं लटकता रह गया, वह चोर का मुर्दा भी वहां से उड़कर फिर यहां ही आ लटका।

लोगों ने गर्दन घुमा कर उस चोर के मृतक की तरफ देखकर कहा–अरे, यह मृतक तो अक्षतांग है, फिर देवी ने यह अशुद्ध है, ऐसा क्यों कहा होगा? राजा ने कुछ देर विचार कर मस्तक हिलाते हुए कहा –हाँ, देवी का कहना ठीक था, जाकर देखो! उस स्त्री का कटा हुआ नाक इसके मुख में होना चाहिये। और इसी कारण देवी ने इस मृतक को अशुद्ध बतलाया होगा। पास में जाकर देखा तो मालूम हुआ कि सचमुच ही उस मुर्दे के मुंह में उस स्त्री की नासिका का अग्र भाग था।

महाबल खेद पूर्वक बोल उठा – अहा मुझे भी यह बात मालूम नहीं रही। वह घटना ही मैंने योगी को नहीं सुनाई। व्यर्थ ही बेचारे योगी के प्राण गये और उसका कार्य भी सिद्ध न हुआ। राजा बोला – बेटा! खेद न कर, होनहार होकर ही रहती है। आगे बोलो, तुम्हारे हाथों पर बँधा हुआ नागपाश किस तरह छुटा? महाबल –पिताजी! उस सर्प की पूंछ को रोष में आकर मैंने अपने दांतों से ऐसी दबाई कि जिससे वह सांप धीरे-धीरे मेरे हाथों से ढीला होकर नीचे जा पड़ा। विषापहारी मंत्र और औषधी के प्रभाव से मेरे शरीर में उसका जहर न चढ़ा। ऐसे असह्य दुःख में रात्रि के अन्तिम दोनों प्रहर मैंने बड़े कष्ट से बिताए। इस समय आप ने आकर मेरा संकट दूर किया। यही मेरी राम कहानी है।

कुमार का पूर्वोक्त चमत्कारी वृत्तान्त सुन आश्चर्य और दुःख का अनुभव करते हुए शहर के प्रधान नागरिक बोल उठे–कुमार! धन्य है आपको। आप ने थोड़े ही समय में दुःख के भयंकर सागर को पार किया।

ऐसे संकट में भी इतनी परोपकार बुद्धि और इतना धैर्य आपके बिना और कौन रख सकता है।

महाबल कुमार के मुख से सब वृत्तान्त सुनकर राजा आदि सभी लोग महाबल को साथ में लेकर योगी के मंत्रसाधन का स्थान देखने के लिये गये। उस अग्निकुण्ड में पड़ा हुआ योगी का शरीर सुवर्ण पुरुष के रूप में दिखाई दिया। उस को वहां से उठवाकर राजा ने अपने खजाने में भिजवा दिया। सुवर्ण पुरुष का यह प्रभाव होता है कि संध्या समय उसके हाथ पैर काट लेने पर रात्रि में वह फिर वैसा ही अगोंपांग सहित हो जाता है।

अब राजा अपने परिवार सहित नगर में आ गया। प्रजाजन भी अपने-अपने स्थान पर चले गये। परिवार सहित राजा के पुनर्जन्म की प्राप्ति की खुशी में नागरिक लोगों ने नगर में दस दिन तक महोत्सव किया। राजा ने भी याचकों को खूब प्रीतिदान किया।

मलय केतु का समागम

महाबल और राजकुमारी मलयासुन्दरी के अकस्मात् गुम होने के कारण उनके वियोग से दुःखित हो महाराज वीरधबल ने उनकी तलाश में अपने पुत्र मलय केतु को पृथ्वीस्थानपुर की तरफ रवाना किया था। अब वह बहन और बहनोई की खोज करता हुआ पृथ्वीस्थानपुर में आ पहुंचा है। राजसभा में आकर उन दोनों के यहां पहुंच जाने का समाचार सुन वह अत्यन्त खुशी हुआ और सूरपाल राजा तथा महाबल कुमार ने भी उसका बहुत ही स्वागत किया। उसीसे मलयासुन्दरी के माता पिता के दुःखित होने का समाचार मालूम हुआ। मलय केतु का स्वागत करने में ही महाबल कुमार को आज राज-सभा में इतनी देर हो गई थी।

राजा के साथ बात चीत करने के बाद मलयासुन्दरी ने अपने भाई मलयकेतु को रनवास में बुलवा लिया, और उससे बड़े प्रेम पूर्वक मिल कर महाराज वीरधवल तथा अपनी माता रानी चंपकमाला आदि का सुख समाचार पूछा। मलयकेतु ने कहा – बहन! तुम लोगों के अकस्मात् चले आने से वे महान दुःख का अनुभव कर रहे है।

महाबल – दैविक प्रयोग से ही हमारा आकस्मिक आगमन हुआ था। अतः मुझे एस बात का दुःख है कि मैं चलते समय उनकी आज्ञा प्राप्त न कर सका। तत्पश्चात् उसने अपनी तमाम घटना कह सुनाई।

मलयकेतु – अहो! इतने थोड़े समय में आप लोगों ने बड़े भारी दुःख का अनुभव किया। यह कहकर उसने अपनी संवेदना प्रगट की, इसके बाद परस्पर प्रेम की बातें करते हुए उन्होंने अपनी भूख प्यास को भी भुला दिया।

कुछ समय तक आनन्द से वहां रह कर एक रोज मलयकेतु ने महाराज शूरपाल से प्रार्थना की कि अब आप मुझे घर जाने की आज्ञा दें, जिससे किं मैं जमाई और पुत्री के अमंगल की चिन्ता से महान् दुख का अनुभव करते हुए माता पिता को जल्दी जाकर सांत्वना दूं। इनके सुख समाचार की बधाई देकर उनके हृदय को आनन्दित करूं।

महाराज शूरपाल – कुमार ! तुम्हारे विनयादि सद्‌गुणों के कारण तुम्हें विदा करने के लिये मेरा मन नहीं मानता तथापि तुम्हारे बतलाये हुये कारण से विवश होकर मैं तुम्हें इसी वक्त चंद्रावती जाने की आज्ञा देता हूँ। तुम्हारे पिता से जाकर कहना, हमारा और उनका बहुत समय से प्रेम सम्बन्ध चला आ रहा है। अब इस रिश्ते के कारण वह और भी दृढ़ता पूर्व वृद्धि को प्राप्त हो गया।

मलयकेतु बोला –महाराज ! जरूर कहुंगा और ऐसा ही होगा।

महाबल बोला – मेरी तरफ से मेरी सासू और श्वसुर जी को नमस्कार पूर्वक कहना कि आपकी आज्ञा लिये बिना आपकी कन्या रत्न को लेकर जाने से चोर का आचरण करने वाले महाबल ने आपको महान् दुःख दिया है। उस अपराध के लिये मैं उनसे बारंबार क्षमा चाहता हूं। और आपके इस दुःख का कारण किसी स्वौर्थ वश नहीं किन्तु दैववशात् पराधीनता से ही मैं हेतु बना हूं।

मलयासुन्दरी –बड़े भैया! दैवाधीनता के कारण ही हमारा यहां अकस्मात् आना हुआ है। यह बात माता पिता से जरूर कहना। अब वे मेरी तरफ से किसी प्रकार की चिन्ता न करें। मैं यहां पर सब तरह से महान् सुख में हूं। मेरे निमित्त से पैदा हुए माता पिता के दुःख के लिये

तुम मेरी तरफ से क्षमा याचना करना और उनके चरण छूकर मेरा बारंबार नमस्कार कहना।

मलयकेतु कुमार ने उन तमाम संदेशों को स्नेहपूर्वक स्वीकार कर बहन बहनोई के वियोग से उत्पन्न हुये दुःख को अश्रु धारा से शान्त कर चंद्रावती की तरफ प्रयाण कर दिया। थोड़े ही दिनों में चंद्रावती में आकर उसने बहनोई और बहन के सुख समाचार की माता पिता को बधाई दी और शोक चिन्ता दूर करा कर उसने सब को आनन्दित किया।

जंगल में रोती हुई स्त्री कौन थी?

सांसारिक आनन्द से सुख शान्ति प्राप्त किये दंपती एक रोज महल की खिड़की में बैठे हुए पुण्य की प्रबलता, कर्मों की विचित्रता, और पाप की विषमता के विषय में परस्पर वार्तालाप कर रहे थे। उस समय महाबल कुमार ने अपने महल के सामने से आती हुई एक स्त्री को देखा। उस स्त्री का नाक कटा हुआ था। उसकी तरफ देख कर महाबल ने मलयासुन्दरी से कहा –प्रिये! सामने आने वाली इस स्त्री को देखो! जिसका रूदन सुन कर उस दिन अन्धेरी रात में दया से प्रेरित हो मैं तुम्हें बगीचे में अकेली छोड़ उसे संकट मुक्त करने गया था, वही यह स्त्री है।

मलयासुन्दरी ने उसकी ओर गौर से देखा, और आश्चर्य के साथ उसने उसे पहचान लिया। अतः वह बोल उठी – स्वामिन्! अरे, यह तो वही कनकवती है, जिसे हमने उस दिन सन्दूक में बन्द कर गोला नदी में बहा दिया था। यह यहाँ पर कहां से आ गई होगी? यह आपके पास कुछ गुप्त बात कहने के लिये आती हो ऐसा मालूम होता है । अगर इसने मुझे पहचान लिया तो लज्जा के कारण यह कुछ भी न कहने पायेगी। इसलिये यदि आपकी आज्ञा हो तो मैं परदे में जा बैठूं। महाबल ने उसे वैसा करने की सम्मति दी।

द्वारपाल से महाबल की आज्ञा मंगाकर वह स्त्री महाबल के पास आई और उसे नमस्कार कर एक तरफ खड़ी रही। महाबल ने भी उचित सम्मान पूर्वक उसे बैठने का इशारा किया।

उसके बैठ जाने पर महाबल बोला भद्रे ! तुम कौन हो? तुम्हारा नाम क्या है! कहां से आई हो? क्या तुम अपना परिचय मुझे दे सकती हो?

कुछ विश्वास पाकर वह छिन्न -नासिका बोली–राजकुमार! मैं विपदा की मारी तुम्हें अपना चरित्र क्या सुनाऊं? खैर, फिर भी सुनाती हूं। सुनो, मैं चन्द्रावती नरेश महाराजा वीरधवल की कनकवती नामा रानी हूँ। एक दिन निष्कारण ही राजा ने मुझ पर कोप किया, मुझे भी उस बात से बड़ा क्रोध आया, और उसी क्रोध में मैं तमाम वस्तुओं और अपने सुख को ठुकरा कर निकल आई। रास्ते में मुझे एक परदेशी युवक मिला। उसने मुझे गोला नदी पर मिलने के लिये संकेत किया । मैं भी रात्रि के समय उसके किये हुए संकेत स्थान पर उसको जा मिली। उस धूर्त ने मुझ से कहा – यहां पर चोर फिरते हैं इसलिये कुछ देर मौन धारण कर खड़ी रह, और जो तेरे पास कुछ माल हो वह रक्षण के लिये मुझे दे दे।

मैंने विश्वास कर अपने पास की तमाम वस्तुएं उसे दे दी। फिर उसने मुझे वहां पड़े हुऐ एक सन्दूक में कुछ देर छिप जाने के लिये कहा। मेरी दी हुई उस वस्तुओं में से एक हार और एक कीमती कंचुक निकाल कर उसने बाकी के वस्त्रादि उस सन्दूक में डाल दिये। चोरों के डर से और उसके कहने से जब मैं उस सन्दूक में बैठ गई तब उस पापी ने उस सन्दूक को ताला लगा दिया। फिर संकेत किये हुए एक दूसरे पुरुष को बुला कर वह सन्दूक उन्होंने गोला नदी के प्रवाह में बहा दिया।

महाबल - भद्रे! क्या उन्होंने वह संदूक जान बूझ कर नदी में बहा दिया था? क्या तुम उन्हें पहचानती हो? उन्हें वैसा करने का कारण तुम्हें मालूम है?

कनक – मैं उन निष्कारण अपने दुश्मनों को बिलकुल नहीं पहचानती। मैंने उनका कुछ भी अपराध न किया था। तथापि उन्होंने मेरे साथ क्यों ऐसा किया यह मैं नहीं जानती।

महाबल - बिना प्रयोजन उन्होंने तुम्हारे साथ बड़ा अघटित आचरण किया! खैर, फिर वह संदूक कहां गया?

कनक – वह संदूक नदी प्रवाह में तैरती हुई प्रातः काल होते ही यहां धनंजय यक्ष के मन्दिर के पास आ लगा। लोहखुर नामक चोर ने

उस संदूक को बाहर निकाला। ताला तोड़ कर उसमें से मुझे बाहर निकाला। मुझे जीवन देने वाले उस चोर के साथ मैं अलंबगिरि के विषय प्रदेश में बनाये हुए उसके मकान पर गई। आपस में हमारा गाढ़ प्रेम हो गया। परस्पर अनन्य विश्वास हो जाने से नगर की चुराई हुई तमाम लक्ष्मी उसने मुझे सम्मान और प्रेम से बतला दिया। मैंने भी अपना नाम तथा स्थान उसे सब कुछ बतला दिया। दोपहर तक मेरे पास रह कर किसी कार्यवश वह नगर में आया।

राज पुरुषों ने उसे पहचान कर पकड़ लिया और राजा के अधीन कर दिया। राजाने उसे बटवृक्ष के साथ लटका कर मरवा दिया। उस समय उसकी राह देखती हुई मैं पहाड़ के शिखर पर खड़ी थी। मेरा मिलाप होते ही थोड़े ही समय में उसकी यह दुर्दशा हुई देख मुझे बड़ा दुःख हुआ। रात्रि के समय मैं उसके पास जाकर शोक से रूदन कर रही थी। उस समय आपने वहां आकर मेरे दुःख का कारण पूछा। इसके बाद का तमाम बृत्तान्त आप जानते ही हैं।

राजकुमार! यदि आप मेरे साथ चलें तो मैं आपको वह स्थान बतला सकती हूँ वहाँ पर बहुत ही धन भरा है। उसे ग्रहण कर जिसका हो उसे आप वापिस दे देवें। मुझे अकेली को इतने धन की कोई आवश्यकता नहीं है। तथा गुप्त वैभव भोगते हुये राजपुरुषों को खबर होने पर मेरी भी चोर के जैसी दुर्दशा न हो इसलिये मैं उस द्रव्य को नहीं चाहती।

महाबल उस स्त्री को महाराज शूरपाल के पास ले गया, और आवश्यकतानुसार कुमार ने महाराज को उसका परिचय दिया। राजा उस स्त्री को अपने आगे करके कई राजपुरुषों को साथ लेकर उस पहाड़ की गुफा में गया। वहां उस स्त्री ने बड़ा भारी दबा हुआ खजाना बतलाया। राजा ने वह तमाम माल बाहर निकलवाया और प्रजा को बुलाकर जिसकी जो वस्तु चुराई गयी थी उन में से वह वस्तु वापिस दे दी। जिस धन का कोई मालिक न था उसे साथ लिवाकर राजा वापिस शहर में आ गया। उसकी योग्यता के अनुसार उस धन में से कुछ धन राजा ने उस स्त्री को दे दिया।

उसे लेकर कुमार के साथ वह फिर महल में आई। वहाँ पर उसने गले में लक्ष्मीपुंज हार धारण किये, और आनन्द रस में निमग्न बनी हुई मलयासुन्दरी को बैठे देखा मलयासुन्दरी को देखते ही उसके हृदय में भयंकर चोट पहुँची तथा इस तरह वह सहसा स्तब्ध हो गयी।

आश्चर्य में पड़ कर वह विचारने लगी–अरे! यह दुष्ट लड़की किस तरह जीवित रही? अन्धकूप में से कैसे निकली? और इस कुमार ने कब और किस तरह इस का पणिग्रहण किया? ये तमाम बातें जानने की उसके हृदय में तीव्र जिज्ञासा हुई। परन्तु कुछ भी पूछने का साहस नहीं हुआ। उसने सोचा यदि मैं इससे यह बात पूछूंगी तो यह मेरा तमाम विचित्र चरित्र प्रगट कर देगी और फिर मुझे यहाँ रहना तक भी मुश्किल हो जायेगा। यह लक्ष्मीपुंज हार भी उस मेरे दुश्मन ने इसे लाकर दिया मालुम होता है। या क्या मालूम इन दोनों ने ही मिलकर, नदी किनारे मुझ से हार ले लिया हो। इससे तो ये ही मेरे दुश्मन सिद्ध होते हैं।

इस प्रकार कनकवती विचार कर रही थी उतने में मलयासुन्दरी बोली - माताजी! आज अनभ्रावृष्टि कैसे हुई? आप यहाँ अकेली कैसे आंई? और आपकी नाक की यह दुर्दशा कैसे और कहाँ हुई?

महाबल – प्रिये! यह बात तुम इनसे मत पूछो ये तमाम बातें मैं जानता हूँ और समय पर तुम्हें सब कुछ बतला दूंगा, अभी तुम अन्दर जाओ। महाबल की आज्ञा होते ही मलयासुन्दरी अन्दर के कमरे में चली गई।

महाबल– कनकवती इस महल के नजदीक में ही एक राजकीय मकान है तुम वहाँ पर जा रहो।

' ऊपर से मीठी परन्तु दुष्ट हृदयवाली कनकवती कुमार के बतलाये हुये मकान में जा कर रहने लगी, और धीरे-धीरे मलयासुन्दरी के पास आने जाने लगी।

जब मनुष्य को उसका भाग्य चक्र में डालता है तब उसकी तीक्ष्ण बुद्धि भी कुछ काम नहीं करती। इसी कारण एक महान् अपराधी को भी महाबल कुमार ने रहने के लिये स्थान दे दिया। इसके परिणाम में उसे कैसा भयंकर विपाक भोगना पड़ेगा इस बात की उसे स्वप्न में भी ख़बर

न थी। या यो कहना चाहिये कि होनहार के सामने मनुष्य की तमाम चतुराई बेकार हो जाती है।

कनकवती की बोल-चाल, हँसना और वार्तालापादि इतना चित्ताकर्षक था कि तीक्ष्ण बुद्धिवाला कुमार भी उसकी धूर्तता को न जान सका। धीरे-धीरे राजमहल में उसका आना जाना बढ़ गया। परन्तु जिस तरह बिल्ली नित्य चूहे के ही ध्यान में रहती है, वैसे ही निष्कारण दुश्मन ऐसी वह मलयासुन्दरी को मारने या वैसे ही किसी महान संकट में डालने के लिये निरन्तर उसके छिद्र देखने लगी। यद्यपि वे दंम्पती इस समय अद्वितीय संसार सुख का अनुभव कर रहे थे, परन्तु उन्होंने अपने ही हाथों से अपने आँगन में भविष्य में कटुफल देने वाला विषवृक्ष लगा लिया।

पुण्य रूप वृक्ष के सुख रूप मधुर फल को भोगते हुए मलयासुन्दरी ने गर्भ धारण किया। महाबलकुमार ने उस के तमाम मनोरथ पूर्ण किये। गर्भ के साथ ही मलयासुन्दरी का लावण्य प्रतिदिन बढ़ने लगा। सुख से समय बिताते हुए गर्भ-प्रसूतिका समय भी अब नजदीक ही आने लगा।

दुर्जन की दुर्जनता सती पर संकट

एक दिन महाराज सूरपाल महाबल से बोले बेटा महाबल! हमारे राज्य की पूर्व सरहद पर रहने वाला - क्रूर नामक पल्ली पति हमारे देश में घुसकर प्रजा को लूट ले जाता है। उसके पास कुछ सेना बल भी हो गया है। मैंने उस पर आक्रमण करने के लिये दो बार सेनापति को भेजा, परन्तु वह पराजित न हो सका उल्टा हमें ही बहुत कुछ नुकसान उठाना पड़ा। तुम्हारे बिना उसके बढ़ते हुए गर्व को और कोई नहीं उतार सकता। सीमा के समीप किसी की भी ताकत को बढ़ने देना हमारे लिये बड़ा खतरनाक है। इसलिये मेरी आज्ञा है कि इस समय प्रबल सेना को साथ लेकर तुम खुद ही उस पर आक्रमण करदो और उसे परास्त कर अपने सीमाप्रान्त को सदा के लिये निरुपद्रव कर दो। यह सुनकर विनय पूर्वक हाथ जोड़कर राज कुमार बोला-पिताजी! आप की आज्ञा शिरोधार्य है। आप आज ही सेनापति को सेना तैयार करने की आज्ञा फरमावें।

आपके आशार्वाद से मैं आपकी आज्ञानुसार आक्रमण कर उसे आपका सेबक बनाकर ही वापिस लौटूंगा।

राजाज्ञा से सेना में पल्लीपति पर चढ़ाई करने की तैयारियां होने लगी। राजकुमार स्वयं सेनापति बनकर पल्ली पति पर आक्रमण करेंगे, यह जान कर सैनिकों में उत्साह का पार न रहा। वे दूने उत्साह से युद्ध की तैयारी करने लगे।

कुमार महाबल पिता को नमस्कार कर अपने महल में गया। पिता की आज्ञा सुनाकर उसने युद्ध में जाने के लिये मलयासुन्दरी से विदा मांगी। वह बोली–प्राणनाथ! आप खुशी से युद्ध में पधारें, परन्तु मैं आपके साथ ही चलूंगी। आप मुझे यहाँ रहने के लिये विवश न कीजिये। आपके परोक्ष में ही मुझ पर विपत्ति के पहाड़ टूट पड़ते हैं। इसलिये आप इस दासी को दूर न करें।

महाबल–प्यारी। युद्ध भूमि में तुम्हें साथ ले जाने का समय नहीं है। तुम सगर्भा हो, और पूरे दिन होने आये हैं। थोड़े ही दिन बाद भावी राज्य कर्ताका जन्म होने वाला है। ऐसी परिस्थिति में मेरे साथ चलना तुम्हारे लिये सर्वथा अनुचित है। प्रसूति का समय आ रहा है। इस वक्त पहाड़ी मार्ग की विषमता और युद्ध का प्रसंग, ये तमाम बाते तुम्हारे इस नाजुक शरीर के लिये बिलकुल प्रतिकूल हैं। तुम धैर्य धारण कर यहाँ ही रहो। यहाँ तुम्हें सब तरह से आराम रहेगा। शत्रु को परास्त कर मैं शीघ्र ही वापिस आ जाऊगा। कभी विषम प्रसंग आजाने पर मैं तुम्हें पुरुष रूप धारण करने की ये गुटिकायें दे जाता हूँ। आम के रस में घिसकर तिलक करने से स्त्री का पुरुष रूप बन जाता है इन गुटिकाओं को हर वक्त सँभाल कर अपने पास रखना। प्यारी! मैं स्वयं तुम्हारा वियोग सहने के लिये असमर्थ हूँ। परन्तु क्या किया जाय? कुलीन पुत्रों का पिता की आज्ञा का पालन करना परम कर्तव्य होता है। अतः प्रिये! तुम मुझे प्रसन्न होकर समर के लिये विदा करो।

पति की आज्ञा से विवश हो अपने दिलको मसोसती हुई मलयासुन्दरी मंद स्वर से बोली - स्वामिन्! इच्छा न होने पर भी आप की आज्ञा को

शिरोधार्य कर मैं यहाँ ही रहती हूँ। आप जल्दी ही पधारें इतना कहते हुये उसका कंठ भर आया। वह आगे कुछ न बोल सकी। आँखों से गालों पर मोती से आँसू ढलक पड़े । यह देख कुमार ने उसे हृदय से लगा लिया, और प्रेम से उसका मुख चूम लिया। प्रेमी हृदय वाले राजकुमार को अपनी प्राणप्यारी से जुदा होने में बड़ा दुःख हुआ। उसकी आँखें भर आई। तथापि वह कठोर बन कर रुमाल से आँखे पोंछता हुआ महल से बाहर निकल गया। तमाम सेना तैयार होकर खड़ी थी। महाबल अपने घोड़े पर सवार हो सेना के साथ पल्लीपति पर चढ़ाई करने के लिये सीमा प्रदेश की ओर चल पड़ा।

कनकवती अपने मकान में बैठी हुई अपने मलीन हृदय के अनुसार विचार तरंगों में गोते खा रही है। मलयासुन्दरी को किस तरह कष्ट में डालूं? कोई उपाय नहीं सूझता कि जिससे उसे संकट में डाल कर अपने चित्त को शान्त करूं। न जाने क्यों उसे देखकर मेरे दिल में डाह पैदा होती है? मैं जरूर मौका पाकर उसे संकट में डाल अपने कलेजे को ठंडा करूंगी।

इन्हीं विचारों की उधेड़ बुनमें उसे महाबल के युद्ध में जाने का समाचार मिला। अब मलयासुन्दरी को अकेली देख उसे बड़ी खुशी हुई। उसने सोचा महाबल के यहाँ रहते हुये मेरा कोई भी उपाय काम न आ सकता था। यह ठीक हुआ मलयासुन्दरी अकेली रह गई। यदि महाबल के परोक्ष में भी मैं किसी उपाय से इससे बदला न ले सकी तो फिर मेरे लिये कोई भी ऐसा सुअवसर नहीं आने का।

यह सोचकर वह शीघ्र ही उठ कर मलयासुन्दरी के महल में आयी। इस समय मलयासुन्दरी अपने महल में उदास होकर बैठी थी। पति वियोग के दुःख से उसके नेत्रों से आंसुओं की बूंदें पड़ रही थीं। वह मुख पर हाथ रख कर विचार दशा में निमग्न हो रही थी। कनकवती के आने की आहट सुन उसने ऊंची गर्दन की अपनी सौतेली माता को आई देख उसने उसे कुछ आदर किया। अवसर देखकर कनकवती ने उसकी उदासीनता को दूर करने के लिये कोई और विषय छेड़ा; उसकी बातों के प्रसंग से मलयासुन्दरी का सारा दिन सुख शान्ति में व्यतीत हुआ।

पति-वियोग के दुःख में उस की मीठी बातें सुन सरल हृदया मलयासुन्दरी बोली—माताजी! तुम रात को भी यहाँ ही रह जाया करो जिससे दिन के समान तुम्हारे समागम से मेरी रात भी सुख से बीत जाय।

मन को इच्छित होने के कारण कनकवती ने खुशी से उसकी बात स्वीकार कर ली। रात को भी कनकवती ने दिन के समान ही अनेक बातों से मलयासुन्दरी के मन को प्रसन्न रक्खा।

प्रातः काल होते ही कुछ सोच विचार कर कनकवती ने मलयासुन्दरी को कहा – बेटी! तुझे दुःखी करने के लिये रात्रि में यहां पर एक राक्षसी फिरा करती है। रात को जब तू सो गई थी, उस समय मैंने प्रत्यक्ष उसको देखा था । जागृत रहने के कारण मैंने तुझ पर उसका कोई उपद्रव नहीं होने दिया। यदि तेरी मर्जी हो तो मैं भी उस राक्षसी के साथ उसके जैसा ही वेष धारण कर उसे ऐसी शिक्षा दूँ कि जिससे वह फिर कभी इधर देख भी नहीं सके। क्यों कि में भूत प्रेतों को निग्रह करने के मंत्र, तन्त्रादिक भी जानती हूँ। क्या तुम्हें मालुम नहीं कि राक्षसी और चुड़ेलों को निवारण करने के अनेक प्रकार के तांत्रिक प्रयोग होते हैं।

विचारशील होने पर भी भाग्य के चक्र में पड़कर मलयासुन्दरी ने उस दुष्ट की बात मंजूर कर ली।

दैव-वशात् इस समय नगर में महामारी का जोर बढ़ रहा था। कोई दिन ऐसा न जाता था, कि जिस दिन दस पंद्रह मनुष्य मृत्यु के ग्रास न बनते हों।

मलयासुन्दरी को पूर्वोक्त प्रकार से समझा कर अपने घर जाने का बहाना ले कनकवती सीधी महाराज शूरपाल के पास पहुंची। वहां जाकर उसने राजा से एकान्त में बात करने की प्रार्थना की। प्रार्थना मंजूर होने पर उसने महाराज शूरपाल से कहा – महाराज! यदि आपकी मुझ पर पूर्ण कृपा हो तो मैं आज आपके हित की एक बात करना चाहती हूँ। राजा बोला - भद्रे! मैं तुझे अभय वचन देता हूँ; चाहे जैसी गुप्त बात हो तू निःशंक होकर कह। यदि उससे तुझे कुछ भय उत्पन्न होने की संभावना हो तो मैं तेरी पूर्ण रक्षा करूँगा।

कनकवती – महाराज! आपको मालूम ही होगा आपके शहर में कितने दिनों से महामारी चल रही है। यह उपद्रव किसी राक्षसी का किया हुआ है। राक्षसी के जैसी चेष्टायें करने वालों से भी रोग की उत्पत्ति या उसकी वृद्धि हो सकती है। ऐसा करने वाली को राक्षसी कहने में किसी प्रकार का दोष नहीं है। इस प्रकार का जनसंहार करने वाली राक्षसी यदि आपके ही राजकुल मे हो तो क्या आप उसे सजा देकर अपनी प्रजा को नही बचा सकते?

यह सुन राजा बोला - भद्रे मेरे राजकुल में ऐसी कौन दुष्टा है? सच बोल मैं उसे सजा देकर अपनी प्रजा की रक्षा करूंगा।

कनकवती बोली महाराज! सच पूछो तो गुलाब में काटें के समान आपकी प्रजा का संहार करने वाली आपकी पुत्रवधू मलयासुन्दरी ही है। यदि आपको मेरे इस वचन पर विश्वास न हो तो रात्रि के समय आप दूर रह कर सब चेष्टायें प्रत्यक्ष देखलें, फिर निश्चय करें। वह रात्रि के समय राक्षसी का रूप धारण कर अपने महल में भ्रमण करती है; इसी कारण से शहर में महामारी विशेष वृद्धि को प्राप्त होती है। ये चेष्टायें देखकर यदि आप रात्रि में उसी समय उसे पकड़ना चाहेंगे, तो वह और भी भयंकर उपद्रव कर सकती है। इसलिये सुबह होने पर आप उसे सुभटों द्वारा पकड़वाकर इच्छित दण्ड दें। इस प्रकार कपट प्रपंच की बाते कर कनकवती मौन होकर खड़ी रही।

राजा प्रथम से ही शहर में फैली हुई महामारी का कारण जानने के लिये उत्सुक था। अब इस कनकवती की बातें सुनकर उसे बड़ा आश्चर्य हुआ। वह एक औरत के कपट पूर्ण वचनों से प्रेरित हो, विचारने लगा। अहो! यह कैसी बात! मेरे निर्मल कुल में ऐसा कलंग! क्या सचमुच ही मेरी पुत्रवधू मलयासुन्दरी राक्षसी है? क्या उसी ने नगर में यह महामारी फैला रक्खी है? यह बात मेरा हृदय मंजूर नहीं करता। परन्तु इस औरत का असत्य बोलने में क्या स्वार्थ होगा? खैर, आज रात्रि में देखने से इस बात का निश्चय हो जायगा।

यह विचार कर चिन्ताग्रस्त हो राजा ने कनकवती से कहा – भद्रे! यह बात तुम किसी अन्य के समक्ष मत करना। ऐसी बात जनता में प्रगट

होने से मेरे निर्मल कुल को कलंक लगता है। इस बात की सचाई का निर्णय आज रात को हो जायेगा फिर जो योग्य होगा सो किया जायेगा।

कनकवती बोली– महाराज! मैं इतनी अज्ञान नहीं हूँ, इसी कारण तो मैंने एकान्त में यह प्रार्थना की है।

अच्छा अब तुम जाओ, यों कह राजा ने कनकवती को विदा किया।

राजमहल से विदा हो कनकवती सीधी अपने मकान पर आई और वहाँ आकर राक्षसी का रूप धारण करने के योग्य वह तमाम सामग्री को साथ ले मलयासुन्दरी के पास आ पहुंची।

रात पड़नेपर वह मलयासुन्दरी से बोली - बेटी! आज मैं उस राझसी का निग्रह करूंगी। जबतक मैं उसे निग्रह करके मकान के अन्दर न आऊं। तब तक तू कमरे से बाहर न आना। यदि उस समय तू कमरे से बाहर निकली तो भयंकर उपद्रव होने की संभावना है।

मलयासुन्दरी को इस तरह की शिक्षा दे वह बाहर आई और नग्न होकर उसने अनेक प्रकार के रंग-बिरंगे चित्रों द्वारा राक्षसी के समान अपने शरीर को चित्रित किया। साक्षात् राक्षसी की भांति रूप बनाकर उसने अपने मुख में लम्बे-लम्बे दाँत लगा लिये। एक हाथ में खप्पर और दूसरे हाथ में लम्बा छुरा लेकर जिस तरह राजा को समझाया था उसी प्रकार की चेष्टाये करनी शुरू की।

इस समय महाराज शूरपाल कितने एक सुभटों को साथ ले सच्चाई जानने के लिये आ खड़े रहे। उन्होंने दूर रहकर मलयासुन्दरी के महल में राक्षसी के सारे आचरण अपनी नजर से देखे। वह मन ही मन बिचारने लगे ओहो! कनकवती की बतलाई हुई तमाम बातें सच ही निकली। इसी स्त्री द्वारा मेरा निर्मल वंश कलंकित हुआ। अब मुझे इस विषय में विलम्ब या सोच बिचार न करना चाहिये। इसके निग्रह का जल्दी ही उपाय करना अच्छा है। यह बात जनता में फूट जाने पर मेरे कुल की बदनामी होगी। और शीघ्र ही उपाय न करने से प्रजा का विशेष संहार होगा। इस कुल कलंकिनी राक्षसी को इसी समय शिक्षा करनी चाहिये। मेरे साथ में बहुत से सुभट हैं, वह मुझे क्या उपद्रव कर सकती

है? अब रात्रि के समय में ही शिक्षा देने से जनता में भी यह बात प्रकट न होगी।

इस प्रकार सोचकर क्रोधसे विचार-शून्य हो राजा ने अपने विश्वासपात्र सुभटों को आज्ञा दी अरे! सुभटो! तुम इसी वक्त जाकर इस दुष्टा को पकड़ लो । एक रथ में बैठा कर इसे घोर अटवी में ले जाकर किसी को मालूम न हो इस तरह मार ड़ालो। राजा का आदेश होते ही हथियार बन्द अनेक सुभट उसे पकड़ने के लिये दौड़ पड़े।

उन राजपुरुषों को आते हुये देख कर वह दुष्टा भयंभ्रांत हो मलयासुन्दरी के पास आकर कम्पित स्वर में बोली बेटी! कितने एक राजसुभट शस्त्र हाथ में लिये मुझे मारने को आ रहे हैं। मालूम होता है मैं राजा की आज्ञा बिना रात के समय तेरे पास रहती हूँ। इसी कारण राजा मुझ पर क्रोधायमान् हुये हैं। संभव है राजपुरुष मुझे अवश्य ही मार डालेंगे इस लिये तू मुझे ऐसी जगह छिपा, जहाँ पर ढूँढने से भी उन्हें मेरा पता न लगे। दया की प्रेरणा से उसके कपट को न समझनेवाली मलयासुन्दरी ने वैसे ही वेष में कनकवती को एक सन्दूक में छिपा कर बाहर से ताला लगा दिया। बस इतने ही में राजा के भेजे हुये शस्त्रधारी सुभट वहाँ पर आ पहुँचे।

क्रमशः

BOYD SMITHS PVT. LTD.
8, Netaji Subhas Road
B-3/5 Gillander House, Calcutta-700 001
Ph: (O) 220-8105/2139,Resi; 329-0629/0319

NAHAR
5/1, A.J.C. Bose Road, Calcutta-700 020
Ph: 247-6874,Resi: 244-3810

KUMAR CHANDRA SINGH DUDHORIA
7, Camac Street, Calcutta - 700 017
Ph: 282-5234/0329

ARIHANT JEWELLERS
Mahendra Singh Nahata
57, Burtalla Street, Calcutta -700 007
Ph: 238-7015, 232-4087/4978

CREATIVE LIMITED
12, Dargah Road, Post Box: 16127, Cal-17
Ph: (033) 240-3758/1690/3450/0514
Fax: (033) 240 0098, 2471833

IN THE MEMORY OF SOHANRAJ SINGHVI
VINAYMATI SINGHVI
13/4 Karaya Road, Calcutta - 700 019
Ph: (O) 2208967, (R) 2471750

GAUTAM TRADING CORPORATION
32, Ezra Street, Calcutta - 700 001
6th Floor, Room No - 654
Ph: (O) 235 0623, (R) 218-6823

VEEKEY ELECTRONICS
36, Dhandevi Khanna Road
Calcutta - 700 054
Ph: 352-8940/334-4140 (R) 352-8387/9885

SUDERA ENTERPRISES PVT. LTD.
1, Shakespeare Sarani, Calcutta - 700 071
Ph: 282-7615/7617/2726
Gram: Sudera

N. K. JEWELLERS
Valuable Stones, Silver wares
Authorised Dealers: Titan, Timex & H.M.T.
2, Kali Krishna Tagore Street (Opp. Ganesh Talkies)
Calcutta - 700 007
Phone: 239 7607

TARUN TEXTILES (P) LTD.
203/1, Mahatma Gandhi Road, Calcutta - 700 007
Ph: 238-8677/1647, 239-6097

ELECTRO PLASTIC PRODUCTS (P) LTD.
22, Rabindra Sarani, Calcutta - 700 073
Ph: 236-3028, 237-4039

IN THE MEMORY OF LATE
JITENDRA SINGH NAHAR
Rabindra Singh Nahar
40/4A, Chakraberia South, Calcutta - 700 020
Ph: (O) 244-1309, (R) 475-7458

SURAJ MAL TATER
C/o Surajmal Chandmal
137, Bipin Behari Ganguli Street
Calcutta - 700 012
Ph: Shop -227-1857 (R) 238-0026

MUSICAL FILMS (P) LTD.
9A, Explanade East
Calcutta - 700 069

PANKAJ NAHATA
Oswal Manufacturers Pvt. Ltd.
Manufacturers & Suppliers of Garments & Hosiery Labels
4, Jagmohan Mallick Lane, Calcutta - 700 007
Ph: (O) 238-4755, (R) 238-0817

APRAJITA
Air Conditioned Market
Calcutta - 700 071
Ph: 282-4649, Resi: 247-2670

MANI DHARI TAR UDYOG
Manufactureres of Flexible Ribbon,
Hookup, Main Cards, P. V. C. Insulated Wires and Cables.
JHANWAR LAL JAIN
96, Old Roshan Pura, Najaf Garh
New Delhi - 110043, Ph:(O) 5016527
(R) 545 3415, 542 3304
Mobile: 9811075330,

ASHOKE KUMAR RAIDANI
6, Temple Street, Calcutta
Ph: 237 4132/236 2072

B. W. M. INTERNATIONAL
Manufacturers & Exporters
Peerkhanpur Road, Bhadohi - 221401 (U.P.)
Ph: (O) 05414-25178,25778,25779
Fax: 05414-25378 (U. P.) 0151-61256 (Bikaner)

C. H. SPINNING & WEAVING MILLS PVT. LTD.
Bothra ka Chowk, Gangasahar, Bikaner

SUDIP KUMAR SINGH DUDHORIA
Indian Silk House Agencies
129, Rasbehari Avenue
Calcutta, Ph: 464-1186

BALURGHAT TRANSPORT LTD.
170/2/C, Acharya Jagadish Bose Road
Calcutta, Ph: 284-0612-15
2, Ram Lochan Mallick Street
Calcutta - 700 073

SURANA MOTORS PVT. LTD.
24A, Shakespeare Sarani
84 Parijat, 8th Floor, Calcutta - 700 071
Ph: 2477450/5264

SAGAR MAL SURESH KUMAR
187, Rabindra Sarani
Calcutta - 700 007
Ph: Gaddy-233-1766/238-8846
Mobile: 98 3102 8566
Resi: 355-9641/7196

M/S. METROPOLITION BOOK COMPANY
93, Park Street, Calcutta - 700 016
Ph: 226-2418, Resi: 464-2783

APRAJITA BOYED
Suravee Business Services Pvt. Ltd.
9/10, Sitanath Bose Lane,
Salkia, Howrah - 711 106
Ph: 665-3666/2272
Email : Suravee @cal2. vsnl. net in
sona @ cal3. vsnl. net in

LALCHAND DHARAMCHAND
Govt. Recognised Export House
12, India Exchange Place, Calcutta - 700 001
Ph: (B) 220-2074/8958 (D) 220-0983/3187
Cable: SWADHARMI, Fax: (033) 2209755
Resi: 464-3235/1541, Fax: (033) 4640547

GRAPHITE INDIA LIMITED
Pioneers in Carbon/Graphite Industry
31, Chowranghee Road, Calcutta - 700016
Ph: 2264943, 292194, Fax: (033) 2457390

GRAPHIC PRINT & PACK
13A, Dacars Lane (Ground Floor) Calcutta - 69
Ph: 248-1533,248-0046

GLOBE TRAVELS
Contact for better & Friendlier Service
11, Ho Chi Minh Sarani, Calcutta - 700 071
Ph: 282-8181

SURENDRA SINGH BOYED
Sovna Apartment
15/1 Chakrabaria Lane
Calcutta - 700 026
Ph: 476-1533

MOTILAL BENGANI
CHARITABLE TRUST
12 India Exchange Place
Calcutta - 700 001, Ph: 220-9255

Dr. ANJULA BINAYIKA
M. D. DND, M. R. C. O. G. (London)
12, Prannath Pandit Street
Calcutta - 700 025, Ph: 474-8008

SMT. KUSUM KUMARI DOOGAR
166, Jodhpur Park, Calcutta - 700068
Ph: 4720610

विशुद्ध केशर तथा मैसूर की सुगन्धित चन्दन की लकड़ी,
वरक एवं धूप के लिये पधारें
SHRI JAIN SWETAMBER SEVA SAMITI
13, Narayan Prasad Babu Lane
Calcutta - 700 007, Ph: 239-1408

AJAY DAGA, AJAY TRADERS
203/1, M.G. Road, Calcutta - 700 007
Ph: (O) 238-9356/0950
(Fact). 557-1697/7059

BALCHAND SOHANLAL
5, Karbala Mohammed Street
Calcutta - 700 001, Ph: 2353902/2759
Fax: 033-2353902

SUNDERLAL DUGAR
R. D. B. Industries Ltd.
Regd. Off: Bikaner Building
8/1 Lal Bazaar Street, Calcutta - 700 001
Ph: 248-5146/6941, Mobile: 9830032021
Fax: 91 (33)2420588

BHANWARLAL KARNAWAT
BEEKY TAI FEB UDYOG PVT. LTD.
City Centre, Room No. 534 & 535, 5th Floor
16, Synagauge Street, Calcutta - 700 001
Ph: 238-7281, 230-1739

KESARIA & CO.
Jute Tea Blenders & Packeteers Since 1921
2, Lal Bazar Street, Todi Chambers, 5th Floor
Calcutta - 700 001
Ph: (O) 348 8576/0669/1242
Resi: 225 5514, 237 8208, 229 1783

GYANI RAM HARAK CHAND SARAOGI
CHARITABLE TRUST
P-8 Kalakar Street, Calcutta - 700 007
Ph: 239 6205/9727

SATKAR CONSTRUCTION PVT. LTD.
Gujrat Mansion, 5th Floor
14, Bentick Street, Calcutta - 700 001
Ph: 248-4730/6256/9867, Direct: 248-6477/6169
Resi: 478-0765/458-3397, Mobile: 98300-30618
Fax: 248-6169

NAKODA METAL
Deals in all kinds of Aluminium
32A Brabourne Road
Calcutta - 700 001
Ph: 2352076, 2355701

DELUXE TRADING CORPORATION
Distinctive Printers
36, Indian Mirror Street
Calcutta - 700 013
Ph: 244-4436

R. K. KOTHARI
N. I. Corporation
Photographic, Heavy & Fine Chemicals
44c, Indian Mirror Street, Calcutta-700 013
Phone: 245-5763/64/65
D: 245-5766, Fax: 91-33-2446148

जो हिंसात्मक प्रवृति से विलग है,
वही बुद्ध, ज्ञानी हैं
WITH BEST WISHES

A. K. CHHAJER
Chhajer & Company
Chartered Accountants
230 A Masjid Moth
South Extension Part-II
New Delhi-110049

लाड़ा देवी ग्रन्थमाला
१२ सी, लार्ड सिन्हा रोड़
कलकत्ता - ७०० ०७१

उद्देश्य

अप्रकाशित, प्राचीन, दुर्लभ, ज्ञानवर्धक एवं जनोपयोगी साहित्य प्रकाशन संवर्धन एवं संयोजन

ग्रन्थमाला से प्रकाशित पुस्तकें

श्रवण बेलगोल इतिहास के परिपेक्ष्य में
निर्माल्य ग्रहण पाप है
तीर्थ मान चित्र
भक्तामर स्तोत्र
जैन प्रश्नोत्तर माला
जैन पूजा पाठ चौबीसी पूजा संग्रह
अक्षय विधि व्रत कथा एवं पूजा
(सुहाग दशमी पूजा)
सरल जैन विवाह विधि
भव पार चलोगे
भक्तामर स्तोत्र पूजा सहित
दीपावली पूजन
तमिलनाडू के जैन तीर्थ
दिव्य ज्योति
जैन व्रत विधि एवं कथा
तत्वार्थ सूत्र
मुझे सुखी होना है
(चिन्तन के कुछ क्षण)-
पंच स्त्रोत
समाधि तंत्र

श्री राजकुमार अभिषेक कुमार सेठी
कलकत्ता

28 water supply schemes
315,000 metres of pipelines
110,000 kilowatts of puming stations
180,000 million litres of treated water
13,000 kilowatts of hydel power plants

(And in places where Columbus would have feared to tread)

Subhash Projects and Marketing Limited

MAN IN PARTNERSHIP WITHNATURE

Head Office: 113 Park Street, 3rd floor, South Block, Calcutta 700016 Ph:(033)245 7562. Registered Office: Subhash House, F-27/2 Okhla Industrial area, Phase II New Delhi 110 020 Ph: (011) 692 7091-94, Fax (011)684 6003. Regional Office:8/2 Lisoor Road, Bangalore 560 042, Ph: (080)559 5508-15, Fax: (080) 559 5580.

Laying pipelines across one of the nation s driest regions, braving temparature of 50° C.

Executing the entire water intake and water carrier system including treatment and allied civil works for the mammoth Bakreshwar Thermal Power Project.

Bulling the water supply, fire fighting and effluent disposal system with deep pump houses in the waterlogged seashore of paradip

Creating the highest head-water supply scheme in a single pumping station in the world at Lunglei in Mizoram-at 880 metres, no less.

Building a floating pumping station on the fierce Brahmaputra.

Ascending 11,000 feet in snow laden Arunachal Pradesh to create an all powerful hydro-electric plant.

Delivering the impossible, on time and perfectly is the hallmark of Subhash Projects and Marketing Limited. Add to that our credo of when you dare, then alone you do. Resulting in a string of acheivements. Under the most arduous of conditions. Fulfilling the most unlikely of dreams.

Using the most advanced technology and equipment, we are known for our innovative solution. Coupled with the financial strength to back our guarantees.

Be it engineering design. Construction work or construction management. Be it environmental, infrastructural, civil and power projects. The truth is we design, build, operate and maintain with equal skill. Moreover, we follow the foolproof Engineering, Procurement and Construction System. Simply put, we are a single point responsibility. A one stop shop.

So, next time, somebody suggests that deserts by definition connote dryness, you recommend he visit us for a lesson in reality.

BOTHRA SHIPPING SERVICES

2, CLIVE GHAT STREET,
(N. C. DUTTA SARANI)
2ND FLOOR, ROOM NO. 10,
CALCUTTA - 700 001
Fax No. 220-6400
Phone: 220-7162
Email : sccbss @ cal2. vsnl. net in

Steamer Agents, Handling Agents,
Commission Agents & Transport Contractors

शास्त्र हिंसा एक से एक बढ़कर है।
किन्तु अशस्त्र अहिंसा से बढ़कर कोई शस्त्र नहीं।
सारांश कि अहिंसा से बढ़कर कोई साधना नहीं है।

THE GANGES MANUFACTURING COMPANY LIMITED

Chatterjee International Centre
33A, Jawaharlal Nehru Road,
6th Floor, Flat No. A-1
Calcutta - 700 071

Gram "GANGJUTMIL"
Fax: + 91-33-245-7591
Telex: 021-2101 GANG IN

Phone: 226-0881
226-0883
226-6283
226-6953

Mill
BANSBERIA
Dist: HOOGHLY
Pin-712 502
Phone: 6346441/6446442
Fax: 6346287

भागवत पुराण के अनुसार
ऋषभदेव जैन धर्म के संस्थापक हैं।

Shri Radha Krishnan

HINDUSTAN GAS & INDUSTRIES LTD.
ESSEL MINING & INDUSTRIES LTD.

Registered Office
"Industry House"
10, Camac Street, Calcutta, 700 017
Telegram: 'Hindogen' Calcutta
Phone: (033) 242-8399/8330/5443

Manufacturers of
Engineers' Steel Files & Carbon Dioxide Gas
At Tangra (Calcutta)
Iron Ore and Manganese Ore Mines
In Orissa

S.G. Malleable & Heavy Duty Iron Castings
At Halol (Gujrat)
Ferro Vanadium and Ferro Molybdenum
At Vapi (Gujrat)
High Purity Nitrogen Gas
At Mangalore
H.D.P.E./P.P. Woven Sacks
At Jagdishpur (U.P.

जैन मत तब से प्रचलित है
जबसे संसार में सृष्टि का आरम्भ हुआ।
मुझे इसमें किसी प्रकार की आपत्ति नहीं है
कि जैन धर्म वैदान्तिक दर्शनों से पूर्व का है।

Dr. Satish Chandra
Principal Sanksrit College, Calcutta

Estd. Quality Since 1940

BHANSALI

Quality. Innovation. Reliability

BHANSALI UDYOG PVT. LTD.

(Formerly: Laxman Singh Jariwala)

Balwant Jain - Chairman

A - 42, Mayaputi, Phase-1, New Delhi-110064
Phone: 5144496,5131086,5132203
Fax: 91-011-5131184
E-mail: Laxman. jariwala @ gems. vsnl. net. in

"ऐसा विश्वास दिल में जमाते चलो
सिद्ध अरिहन्त को मन में रमाते चलो,
वक्त आयेगा ऐसा कभी न कभी
सिद्धि पायेंगे हम भी कभी न कभी।"

KUSUM CHANACHUR
Founder: Late Sikhar Chand Churoria

Our Quality Product of Chanachur.
Anusandhan, Raja,
Rimghim, Picnic,
Subham, Bhaonagari Ghantia.

Manufactured By
M/s. K. C. C. Food Product
Prop. Anil Kumar, Sunil Kumar Churoria
P. O. Azimganj, Pin-742122
Dist: Murshidabad
Phone: Code: 03483 No. : 53232
Cal. Phone: No.: 033 2300432, 5213863

With Best Compliments.....

MARSON'S LTD

MARSON'S THE ONLY TRANSFORMER MANUFACTURER IN EASTERN INDIA EQUIPPED TO MANUFACTURE 132 KV CLASS TRANSFORMERS

Serving various SEB's Power station, Defence,
Coal India, CESC, Railways,
Projects Industries since 1957.

Transformers type tested both for Impulse/Short Circuit test for Proven desing time and again.

PRODUCT RANGE

Manufactures of Power and Distribution Transformer From 25 KVA to 50 MVA upto 132kv level.

Current Transformer upto 66kv.

Dry type Transformer.

Unit auxiliary and stations service Transformers.

18, PALACE COURT
1, KYD STREET, CALCUTTA - 700 016
PHONE: 229-7346/4553/226-3236/4482
CABLE-ELENREP TLX-0214366 MEL-IN
FAX-00-9133-225948/2263236

JAIN BHAWAN PUBLICATIONS

P-25 Kalakar Street, Calcutta - 700 007

English:

1. Bhagavati-sutra-Taxt edited with English translation by K. C. Lalwani in 4 volumes:
   - Vol - 1 (satakas 1-2) Price : Rs. 150.00
   - Vol - 2 (satakas 3-6) 150.00
   - Vol - 3 (satakas 7-8) 150.00
   - Vol -4 (satakas 9-11) 150.00
2. James Burges - The Temples of Satrunjaya. Jain Bhawan. Calcutta; 1977. pp. x+82 with 45 plates (It is the glorification of the sacred mountain Satrunaya.} Price : Rs. 100.00
3. P. C. Samsukha - Essence of Jainism translated by Ganesh Lalwani. Price : Rs. 15.00
4. Ganesh Lalwani - Thus Sayeth Our Lord, Price : Rs. 15.00
5. Lalwani and S.R. Benerjee - Weber's Sacred Literature of the Jains Price : Rs. 100.00

Hindi

6. Ganesh Lalwani - Atimukta (2nd edn) Translated by Shrimati Rajkumar Begani Price Rs. 40.00
7. Ganesh Lalwani - Sraman Samskriti ki Kavita. translated by Shrimati Rajkumari Begani Price : Rs. 20.00
8. Ganesh Lalwani - Nilanjana translated by Shrimati Rajkumari Begani Price : Rs. 30.00
9. Ganesh Lalwani - Candana-Murti translated by Shrimati Rajkumari Begani. Price: Rs. 50.00
10. Ganesh Lalwani-Vardhaman Mahavira Price: Rs. 60.00
11. Ganesh Lalwani-Barsat ki Ek Rat, Price: Rs. 45.00
12. Ganesh Lalwani Pancadasi. Price: Rs. 100.00
13. Rajkumari Begani-Yado ke Aine me. Price: Rs. 30.00

Bengali:

14. Ganesh Lalwani-Atimukta, Price: Rs. 40.00
15. Ganesh Lalwani-Sraman Samskrti Kavita. Price:Rs. 20.00
16. Puran Chand Shyamsukha-Bhagavan Mahavir O Jaina Dharma. Price.Rs. 15.00
17. Satya Ranjan Bandyopadhyay-Prasnottare Jaina-dharma Price:Rs. 20.00

मानव जीवन नश्वर हैं उसमें भी आयु तो बहुत ही परिमित है

एकमात्र मोक्ष मार्ग ही अविचल है यह जानकर

काम भोगो से निवृत हो जाना चाहिए।

*

G.C. Jain

A-40 N.D. S.E-11

New Delhi - 110049

Tel : 625-7095/0330

WB/RNP-45
Vol. XXIV No. 11 **TITTHAYARA** February 2001
Registered with the Registrar of Newspapers for India
under No. 30181/77

कोहो पीइं पणासेइ, माणी विणयनासणो।
माया मित्ताणि नासेइ, लोभो सव्वविणासणो।।

क्रोध प्रीति का नाश करता है,
मान विनय का नाश करता है,
माया मित्रता का नाश करती है,
और लोभ सभी सद्गुणों का नाश कर देता है।

Kamal Singh Rampuria
Rampuria Mansions
17/3 Mukhram Kanoria Road, Howrah
Phone No. : 666 7212/7225